जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
Jai Narain Vyas University, Jodhpur

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

''स्वाधीनता संग्राम में राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों का अवदान''

२४-२५ मार्च, २०१८

हिन्दी विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय एवं भाषा संस्थान लखनऊ का संयुक्त आयोजन

प्रस्तावना : देशभक्ति की सामान्य मानवीय वृत्ति स्वचेतन होकर राष्ट्रीयता का रूप ग्रहण करती है, और यों यह स्वचेतन राष्ट्रबोध आधुनिक संवेदना का पहला महत्वपूर्ण कारण और प्रमाण दोनों हैं । भारतेन्दु के लिए यह भी कहा गया कि वे ऐसे भक्त थे जो समाकालीन राजनीति पर पूरी निगाह रखते थे । उनकी दो पंक्तियाँ–''अँगरेज राज सुख साज सजै सब भारी/पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ।' आधुनिक काल की समूची कशमकश को सूत्र रूप में कह देती हैं । वहाँ से चलकर रघुवीर सहाय के 'अधिनायक' तक राष्ट्रीय बोध की लंबी यात्रा है जिस बिंदु पर वे कहते हैं–''राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत–भाग्य विधाता है/फटा सुथन्ना पहने जिसका गुन हरचरना गाता है । 'यो गुलामी का दर्द और आजादी का दर्द एक दूसरे के आमने–सामने होते हैं । भारतेन्दु अँगरेज राज के 'सुख साज' पर ध्यान देते हैं, रघुवीर सहाय स्वराज के 'मखमल टमटम बल्लम तुरही' पर हरचरना दोनों में छूट जाता है ।

अब विडंबना है कि वह यह भी नहीं पहचान पाता कि राष्ट्रगान में वर्णित 'भारत भाग्य विधाता' है कौन? क्या यह व्यंजना नहीं उभरती कि 'भारत भाग्य विधाता' तो स्वयं हरचरना को होना था या कि उस जैसे अनक हरचरनाओं को, 'जनगण' को, जब कि वह अभी इस प्रश्न से ही उलझ रहा है कि यह 'भारत भाग्य विधाता' भला कौन है? राष्ट्रीयता के भाव–बोध में यह जन–चेतना का उभार है । यदि सूत्र रूप में कहें तो भारतेन्दु में देशभक्ति कमशः रूपान्तरित होती है राष्ट्रीयता में, जिसका अधिक प्रबल और सुस्पष्ट रूप मैथिलीशरण गुप्त में दिखता है । छायावाद के उदय के साथ यह राष्ट्रीयता कुछ शमित होकर सांस्कृतिक चेतना का रूप लेती है और फिर छायावादोत्तर काल में व्यापक जन–चेतना में परिणत होती है। भारतेन्दु से रघुवीर सहाय तक राष्ट्रीयता के य विविध रंग हैं ।

राष्ट्रीयता एक वैचारिक स्वचेतना मनोभूमि है । उसके साथ तब कमशः कई तरह की चिंताएँ जुड़ जाती हैं । मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और रामधारी सिंह 'दिनकर' के राष्ट्रबोध में एक सीधी–सरल आत्मीयता थी राष्ट्र के प्रति और वैसा ही तीव्र आक्रोश विदेशी शासन के

प्रति। पर छायावाद में राष्ट्रीयता का स्वरूप भी जटिल और संश्लिष्ट होता है कुछ सांस्कृतिक चिंताओं के जुड़ जाने के कारण । प्रगतिवाद की राष्ट्रीयता में वामपंथी राजनीति का एक खास तरह का स्वर मुखर होता है, जो प्रयोगवाद के अधिकतर कवियों को स्वीकार्य नहीं है । 'तारसप्तक' के मूल संस्करण (1943) और परिवर्द्धित संस्करण (1966) के अतिरिक्त वक्तव्यों के बीच इस अंतर को बखूबी लक्षित किया जा सकता है । नयी कविता वैचारिकता का पोषण तो लेती है, पर किसी राजनैतिक विचारधारा का दबाव स्वीकार नहीं करती ।

देश प्रेम एक सहज मानवीय वृत्ति है, जिससे देश भक्ति उपजतो है । भारतेन्दु और मैथिलीशरण गुप्त इस भाव को 'देश वत्सलता' कहते हैं । अपने 'नाटक' शीर्षक निंबंध में भारतेन्दु ने नवीन नाटकों की रचना के जो मुख्य उद्देश्य बताए हैं उनमें से अंतिम 'देश वत्सलता' बताया है । 'जयद्रथ वध' की भूमिका में मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा, ''इसके लिए प्रयत्न करना प्रत्येक साहित्य और देशवत्सल मनुष्य का कर्त्तव्य है....।'' छायावाद के दौर में प्रसाद और निराला राष्ट्रीयता के राजनैतिक पक्ष के बजाय उसके सांस्कृतिक पक्ष पर अधिक दृष्टि रखते हैं । प्रसाद के विविध राष्ट्र–गान तथा निराला का काव्य 'तुलसीदास' इस परिवर्तित दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं । आधुनिक काल के आरंभिक कवियों में ईश–वंदन से मातृभूमि–वंदना और राष्ट्र–वंदना की ओर झुकाव को दिखाने के लिए अनेक प्रसिद्ध कविताएँ सामने आती हैं । इस कम में पहली महत्वपूर्ण खड़ी बोली रचना है मैथिलीशरण गुप्त की 'मातृभूमि' जिसका आरंभिक अंश है–''नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है...।' प्रसाद यों जब तक ब्रजभाषा में लिखते रहते हैं उन्हें जननी जन्मभूमि की चिंता नही होती, पर खड़ी बोली में आते ही जननी जन्मभूमि और उसके युवा पुत्रों को वे सीधे स्मरण करते हैं । देश–प्रेम, देश–वत्सलता और देश–भक्ति के बाद राष्ट्रीयता का भाव–बोध है । राष्ट्रीयता की भावना पराधीन देश में जागृत होती है, जागृत की जाती है, स्वाधीन देश को सामान्यतः राष्ट्रीयता का एहसास नहीं हाता जब तक कि उसे किसी बाह्य खतरे का सामना न करना पड़े । राष्ट्रीयता अब विदेशी शासन और शोषण से मुक्ति की ही समस्या नहीं, अब वह समूचे राष्ट्र को समरस एवं सांस्कृतिक चेतना से समृद्ध बनाने की भी समस्या है । विडंबना यह है कि **देश जब राजनैतिक दृष्टि से गुलाम था तब सांस्कृतिक स्तर पर स्वाधीन था, आज राजनैतिक दृष्टि से स्वाधीनता है पर सांस्कृतिक रूप में गुलामी गहरी होती जा रही है ।**

ऐसे संक्रमण काल में आवश्यक हो जाता है कि इन तमाम मुद्दों पर हम चिंतन–मनन करें । इन्हीं चिंताओं का हल खोजने का उपक्रम है यह अंतराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी । क्या कारण है कि देश के भीतर और बाहर राष्ट्र को विखंडित करने के ताने–बाने बुने जाते हैं, क्या कारण है कि आज राष्ट्रीयता के राजनैतिक पक्ष के आगे सांस्कृतिक पक्ष को विस्मरण किया जा रहा है, क्या कारण है कि स्वाधीनता आंदोलन के दौरान राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य और दायित्व का जो प्रबल आवेग था आज वह तिरोहित होता जा

रहा हैं और हम क्षद्र स्वार्थों, बाजारवाद, भूमंडलीकरण के पश्चात् पाश्चात्य संस्कृति के व्यमोह से उत्पन्न समस्याओं तथा समष्टि के स्थान पर व्यष्टि की स्वाधीनता को मुखर करते हुए राष्ट्र के सौ टुकड़े करने पर आमादा हो जाते हैं । आशा है कि इस संगोष्ठी के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, भौतिक, भौगोलिक, अध्यात्मिक ही नहीं सांस्कृतिक चिंताओं पर भी चिंतन करेंगे और साहित्य के मूलभूत उद्देश्यों का पुनर्पाठ करेंगे ।

: संगोष्ठी के उपविषय :

- राष्ट्रवाद की भारतीय अवधारणा
- राष्ट्रवाद की पाश्चात्य अवधारणा
- भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में 1857 की भूमिका
- भारतेन्दु युगीन कविता में राष्ट्रीय चेतना
- द्विवेदी युगीन कविता में राष्ट्रीय चेतना
- छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में राष्ट्रीय चेतना
- प्रगतिशील कविता में राष्ट्रीय चेतना
- प्रयोगवाद और नयी कविता में राष्ट्रीय चेतना
- वैश्वीकरण के दौर में राष्ट्रीय चेतना
- भारतीय राष्ट्रवाद के संदर्भ में स्वतंत्रता पूर्व का साहित्य
- प्रवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता
- राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी पत्रिकाएँ
- स्वाधीनता संग्राम और साहित्य के विविध स्वर
- भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

संरक्षक :

- प्रो. आर पी सिंह, कुलपति, जयनारायण व्यास विशविद्यालय, जोधपुर
- प्रो. डी सी जैन, अधीष्ठाता, कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
- प्रो. कैलाश कौशल, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

संपर्क सूत्र : 9928294333 ईमेल–kailash.kaushaljnvu@gmail.com

- डॉ. नरेन्द्र मिश्र, निदेशक, अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर । संपर्क सूत्र : 9829696683 / 9407555959

  ईमेल : inseminar18@gmail.com

आयोजन समिति :

प्रो. के एन उपाध्याय, प्रो. एस के मीणा, प्रो के एल रैगर, प्रो डी के एस गौतम, डॉ. श्रवण कुमार, डॉ. के एस मीणा, डॉ. महीपाल सिंह राठौड, डॉ. कीर्ति माहेश्वरी, डॉ. प्रेम सिंह, श्री. महेन्द्र सिंह, डॉ. कामिनी ओझा, डॉ. मीता सोलंकी, डॉ. विनिता चौहान, डॉ. कमला चौधरी, डॉ. भरत कुमार, डॉ. प्रवीणचन्द, श्री फत्ताराम, डॉ. अरविन्द कुमार जोशी ।

कार्यक्रम की रूपरेखा

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी : 24–25 मार्च, 2018 (शनिवार, रविवार)
स्थल –85 इंटरनेशनल सभागार, एमबीएम कॉलेज, जोधपुर

: आधार विषय :

''स्वाधीनता संग्राम में राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों का अवदान''

प्रथम दिवस

- प्रातः 9–10 : पंजीयन
- 10–12.30 : उद्घाटन सत्र
- 12.30–1.30 : लंच
- 1.30 –3.15 : I वैचारिक सत्र : **राष्ट्रवाद की संकल्पना**
- 3.15–3.30 : चाय
- 3.30–5.30 : II वैचारिक सत्र : **भारतीय साहित्य में राष्ट्रवाद**

द्वितीय दिवस

- प्रातः 9–9.30 : जलपान
- प्रातः 10–12.30 : III वैचारिक सत्र : **काव्य में राष्ट्रीय चेतना के उत्स**
- 12.30–1.30 : लंच
- 1.30–3.30 : IV सत्र : **वाद–विवाद–संवाद**
- 3.30–3.45 : जलपान
- 3.45–5.30 : समापन सत्र : **साहित्य का सामर्थ्य**

पंजीयन प्रपत्र

पंजीयन कमांक

1. नाम : प्रो/डॉ/श्रीमान्/श्रीमती/सुश्री :...
2. पदनाम : ....
3. विभाग व महाविद्यालय/विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम : ....
   ....
4. पत्र व्यवहार का पता : ....
   ....
5. संपर्क सूत्र : मोबाइल नं...दूरभाष नं...
6. ईमेल : ....
7. आगमन की तिथि.. प्रस्थान की तिथि ....
8. आवास चाहिए : हाँ/नहीं ....
9. शोध पत्र का शीर्षक :...
   ....
10. पंजीयन शुल्क : नगद/चैक/ड्राफ्ट/ऑनलाइन...

अध्यापक 1500/– शोधार्थी 1000/– विद्यार्थी 300/–

चैक/ड्राफ्ट/ऑनलाइन का भुगतान : निदेशक, अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, हिन्दी विभाग के नाम से देय होगा बचत खाता नं. : 05710100023694

बैंक का नाम : बैंक ऑफ बड़ौदा, यूनिवर्सिटी कैंपस, जोधपुर IFSC– BARB0UNIJOD (fifth character is zero) MICR Code : 342012006

Email : inseminar18@gmail.com

शोध पत्र भेजने की तिथि : **एम एस वर्ल्ड कृतिदेव–10 में 20 मार्च, 2018 तक**

स्थान :

दिनांक : प्रतिभागी के हस्ताक्षर :..

प्रेषक :

- **डॉ. नरेन्द्र मिश्र,** निदेशक, अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर । संपर्क सूत्र : 9829696683/9407555959

  ईमेल : inseminar18@gmail.com